Vocabulaire n° 3 - शब्दावली सं. ३

सोमवार के शेष शब्द :

निचोड़ (m.) extrait, (fig.) résultat
निचोड़ू (m.) maître chanteur
मसलन par exemple
क़िसम (f.) catégorie, sorte
पश्चिमी /पच्छमी occidental
आधुनिक moderne
रहन-सहन (m.) mode de vie
शैली (f.) style
समकालीन contemporain
प्रतिक्रिया (f.)réaction
बौद्धिक intellectuel
पारंपरिक traditionnel
अपनी अपनी पसंद chacun ses goûts

भ्रष्टाचार / रिश्वत

घोटाला (m.) scandale
औकात statut
अंबार (m.) pile
दुविधा (f.) dilemme
तैश rude
किश्ती (f.) barque
कूआँ (m.) puits
करुणा (f.) pitié
जनता (f.) peuple
खाई (f)ravin
उदासी (f.) tristesse
आदर्श (m.) idéal
विदा लेना prendre congé
झोंकना tout jeter
ज्वार-भाटा (m.) tempête
नियुक्ति (f.)poste
चाल-चलन manière d'être
भटकना errer
स्नेह (m.) affection
जुटाना réunir
उत्साह (m.) entousiasme
वेतन (m.) salaire
विपरीत opposé
डगमगा zigzaguer, (ici) tanguer

चर्चे के लिए :

हल / समाधान (m.) solution
लालच (f.) cupidité
साधन (m.) moyen
विकल्प (m.) alternative
हल निकालना trouver une solution
दुश्मनी मोल लेना déclencher l'inimitié (se mettre à dos)
काम आगे बढ़ना progresser (un travail)
अनदेखा करना faire semblant de ne pas voir
खुले आम ouvertement
ऊपर से नीचे तक de haut en bas
न चाहते हुए भी même contre son gré
जान - बुझकर en connaissance de cause

इधर कूआँ उधर खाई

नरेन अब अफ़सर बन गया है। घर से दूर किसी छोटी जगह पर सरकार ने उसकी नियुक्ति भी कर दी है।

घर से विदा लेते समय बस-अड्डे पर वह अपने पिता के चेहरे पर देख रहा था कभी खुशी, कभी स्नेह, कभी उत्साह, कभी करुणा, कभी उदासी। स्नेह से पिता बोले थे : -"नरेन, अब तुम बी.डी.ओ. साहब हो गए हो, लेकिन कहीं बहन-भाइयों को मत भूल जाना। हमारी क्या औकात थी तुम्हें इतना पढ़ाने लिखाने की। सब भगवान की दया और तुम्हारे भाग्य से हुआ। जो थोड़ी बहुत ज़मीन मेरे पास थी वह सब बेचकर या रहन रखकर मैंने तुम्हारी पढ़ाई में झोंक दी। तुम्हारी दो बहनों की शादी अभी होनी है। अपने समाज का चाल-चलन तो तुम समझते ही हो। अच्छा घर पाने के लिए पैसा भी जुटाना होगा। ख़र्चा ज़रा ध्यान से करना!" नरेन मन ही मन सोच रहा था कि यह सब पैसा कहाँ से आएगा? उसका वेतन तो बहुत ज़्यादा नहीं है।

उधर नरेन ने जाकर अपनी ड्यूटी संभाली। पहले ही दिन घर में तोहफ़ों के अंबार लग गए थे। दफ़्तर का सब से बड़ा बाबू समझा रहा था : - "कल प्राइमरी स्कूल के मास्टरों का वेतन-दिवस है। उस में हर माह सात-आठ सौ रुपए आ जाते हैं। उसमें आधी रकम हज़ूर की होती है, आधे में हम स्टाफ़ के लोग बाँट लेते हैं।"

- "लेकिन यह सब नहीं चलेगा"... साहब तैश में बोले :

- "हज़ूर, पूरे देश में चलता है। मंत्री से लेकर कमिशनर तक। सब जगह चलता है। जो जनता की सेवा करता है तो जनता उसकी भी तो सेवा करेगी, न ? आप अभी नए हैं साब, धीरे धीरे सब समझ जाएँगे।"

नरेन की आँखों में कभी अपने बूढ़े माँ-बाप की चिंता-भरी झुर्रियाँ झलकतीं, कभी दो कँवारी बहनों का भविष्य उसकी आँखों के सामने घूम जाता, तो कभी वह अपने आदर्शों के ज्वार-भाटे में भटक जाता। दो विपरीत लहरों के बीच उसके मन की किश्ती डगमगा रही थी।

- जवाहरसिंह कृत "जाल" कहानी से आधारित

१- आपके ख़्याल में नरेन के पिता को यह सब कुछ कहना चाहिए था जो उन्होंने नरेन को कहा था कि नहीं ?

२ - भारत में भी कोई ऐसा अनुभव बतोएँ जिसमें अपना काम आगे बढ़ाने के लिए आपको रिश्वत देनी पड़ी।

३ - फ़्रांस में भी रिश्वत चलती है कि नहीं ?

४ - रिश्वत लेनेवाले का ज़्यादा कसूर है या रिश्वत देनेवाले का ?

५ - आपके ख़्याल में, इस हालत में नरेन क्या करेगा ?

दूसरा विषय :

आपका एक हिंदुस्तानी दोस्त फ़्रांस में रहने आ रहा है। वह फ़्रांसीसी त्यौहारों के बारे में पूछता है। आप इसे एक त्यौहार का मतलब समझाएँ
(धार्मिक या लौकिक 'laïc, profane')।